1st PUC **हिन्दी- साहित्य वैभाव**

गद्यभाग - २).युवाओं से

I.एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.स्वामी विवेकानंद का विश्वास किन पर है?

उत्तर:स्वामी विवेकानंद का विश्वास नवीन पीढ़ी के नवयुवकों पर है।

प्रश्न 2.स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारत के राष्ट्रीय आदर्श क्या हैं?

उत्तर:स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारत के राष्ट्रीय आदर्श त्याग और सेवा है।

प्रश्न 3.कौन सबकी अपेक्षा उत्तम रूप से कार्य करता है?

उत्तर:निःस्वार्थी व्यक्ति सबकी अपेक्षा उत्तम कार्य करता है।

प्रश्न 4.किस शक्ति के सामने सब शक्तियाँ दब जाएँगी?

उत्तर: इच्छाशक्ति के सामने सब शक्तियाँ दब जाएँगी।

प्रश्न 5.असंभव को संभव बनानेवाली चीज़ क्या है?

उत्तर: असंभव को संभव बनानेवाली चीज़ प्रेम है।

प्रश्न 6.जो अपने आपमें विश्वास नहीं करता, वह क्या है?

उत्तरःजो अपने आप में विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है।

प्रश्न 7.कमज़ोरी किसके समान है?

उत्तर: कमजोरी मृत्यु के समान है।

प्रश्न 8.सबसे पहले हमारे तरुणों को क्या बनना चाहिए?

उत्तर: सबसे पहले हमारे तरुणों को मजबूत बनना चाहिए।

प्रश्न 9.प्रत्येक आत्मा क्या है?

उत्तर:प्रत्येक आत्मा अव्यक्त ब्रह्म है।

प्रश्न 10.नवयुवकों को किसकी तरह सहनशील होना चाहिए?

उत्तर: नवयुवकों को पृथ्वी की तरह सहनशील होना चाहिए।

II.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.भारतवर्ष का पुनरुत्थान कैसे होगा?

उत्तर: स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारत का पुनरुत्थान शारीरिक शक्ति से नहीं, बल्कि आत्मिक शक्ति से होगा। वह उत्थान विनाश की ध्वजा से नहीं, बल्कि शांति और प्रेम की ध्वजा से होगा। हमारी यह वृद्ध भारत माता पुनः एक बार जाग्रत होकर अपने सिंहासन पर पूर्ण वैभवता के साथ विराजमान होगी।

प्रश्न 2.त्याग और सेवा के बारे में स्वामी विवेकानंद जी के क्या विचार हैं?

उत्तर: स्वामी विवेकानंद के अनुसार "भारत के राष्ट्रीय आदर्श हैं- त्याग और सेवा। तुम काम में लग जाओ, फिर देखोगे इतनी शक्ति आयेगी कि तुम उसे सँभाल नहीं सकोगे। दूसरों के प्रति सोचने से व काम करने से भीतर की शांति जाग उठती है और धीरे-धीरे हृदय में सिंह का-सा बल आ जाता है। दुखियों का दर्द समझो और ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करो। प्रतिज्ञा करो कि अपना सारा जीवन लोगों के उद्धार कार्य में लगा देंगे।"

प्रश्न 3.स्वदेश-भक्ति के बारे में स्वामी विवेकानंद जी का आदर्श क्या है?

उत्तर:स्वदेशभक्ति के बारे में स्वामीजी कहते हैं- बड़े काम करने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है बुद्धि, विचारशक्ति और हृदय की महाशक्ति। अतः युवकों को चाहिए कि वे हृदयवान बने । यदि युवकों ने जान लिया है कि भारत के अपने गरीब, दीन- बन्धुओं की कई समस्याएँ हैं, तो समझ लो कि यही देशभक्ति की प्रथम सीढ़ी है। देशभक्ति का पहला पाठ है- स्वदेश-हितैषी होना। "उठो, जागो और तब तक रुको नहीं, जब-तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाय।"

प्रश्न 4.सर्व धर्म सहिष्णुता के बारे में स्वामी विवेकानंद जी के विचार लिखिए।

उत्तर:सर्व धर्म सहिष्णुता के बारे में स्वामीजी का विचार है- मैं सभी धर्मों को स्वीकार करता हूँ। और उन सबकी पूजा करता हूँ। मैं उनमें से प्रत्येक के साथ ईश्वर की उपासना करता हूँ। वे स्वयं चाहे किसी भी रूप में उपासना करते हो, मैं मुसलमानों की मस्जिद में जाऊँगा, मैं ईसाइयों के गिरिजा में क्रास के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करूँगा, मैं बौद्धमंदिरों में जाकर बुद्ध और उनकी शिक्षा की शरण लूँगा। मैं जंगल में जाकर हिन्दुओं के साथ ध्यान करूँगा, जो हृदयस्थ ज्योतिस्वरूप परमात्मा को प्रत्यक्ष करने में लगे हुए हैं।

प्रश्न 5.शिक्षा के बारे में स्वामी विवेकानंद जी क्या कहते हैं?

उत्तर:स्वामी विवेकानंदजी के अनुसार - शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में ढूंस दिया गया है और जो आत्मसात हुए बिना वहाँ आजन्म पड़ा रहकर गड़बड़ मचाया करता हैं। हमें उन विचारों की अनुभूति करनी चाहिए, जो जीवन निर्माण तथा चरित्र-निर्माण में सहायक हों। यदि केवल पाँच ही परखे हुए विचार आत्मसात् कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हैं, तो हम पूरे ग्रंथालय को कंठस्थ करनेवाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हैं।

III.ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए:

प्रश्न 1.'यह याद रखो कि तुम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो।

उत्तरः

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव के 'युवाओं से' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी विवेकानंद हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य को स्वामी विवेकानंद जी नवयुवकों को मार्गदर्शन देते हुए अपने भाषण में कहते है।

स्पष्टीकरण : स्वामी विवेकानंद कहते है कि युवा दुर्बल नहीं हैं। वे सब ईश्वर की संतान हैं, उनकी आत्मा पवित्र और पूर्ण है। वे स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हैं। उनका बल उन्ही के भीतर है। इन शब्दों द्वारा वे युवकों को राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा दे रहे हैं।

प्रश्न 3.'भय से ही दुःख होता है, यह मृत्यु का कारण है तथा इसी के कारण सारी बुराई तथा पाप - होता है।

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'युवाओं से नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी विवेकानंद हैं।

संदर्भ: स्वामी विवेकानंद नवयुवकों को जागृत करते हुए कहते हैं कि भय से मनुष्य दुर्बल बन जाता है और वही उसके पतन का कारण होता है।

स्पष्टीकरण : युवा पीढ़ी को स्वामीजी हिम्मत देते हुए कहते हैं कि तुम्हें कमजोर, भयभीत नहीं होना चाहिए। निर्भीकता से ही किसी राष्ट्र की उन्नति साध्य है। भय ही. मृत्यु का कारण बनता है और इसी से पाप का जन्म होता है।

प्रश्न 4.'ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना अच्छा है।

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'युवाओं से' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी विवेकानंद हैं।

संदर्भ:स्वामी विवेकानंद नवयुवकों को उद्बोधन करते हुए कहते हैं कि धर्म में अंधविश्वास रखनेवालों से बेहतर नास्तिक हैं।

स्पष्टीकरण : ईश्वर की भक्ति सच्चे मन से, विश्वास के साथ करनी चाहिए। दिखावटी या ढोंगी भक्ति से तो नास्तिक बनना बेहतर है। स्वामीजी के ये विचार हैं।

प्रश्न 5.'मैं तुम सबसे यही चाहता हूँ कि तुम आत्मप्रतिष्ठा, दलबंदी और ईर्ष्या को सदा के लिए छोड़ दो।'

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'युवाओं से' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी विवेकानंद हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य में स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि स्वार्थ भावना को त्यागकर उचित मार्ग पर चलना अनिवार्य है।

स्पष्टीकरण : स्वामीजी के अनुसार संगठन के लिए जो बातें चाहिए, आज उनका अभाव है। वास्तव में देशभक्तों की एकता के लिए आपसी ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार - ये सारी बातें नहीं होनी चाहिए। इनसे एकता में बाधा पहुँचती है।